जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अशान्त चित्त में लिया गया कोई भी निर्णय आत्मा के हित के लिए तो होता ही नहीं है, समाज के लिए भी उपयोगी नहीं होता है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ - 5

वर्ष : 26, अंक : 21 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (प्रथम) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा एवं पण्डित जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन छिन्दवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में अहिंसा वर्ष के अन्तर्गत दिनांक 17 जनवरी से 23 जनवरी 2004 तक श्री नेमीनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव विविध धार्मिक आयोजनों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों से होता था। इसी क्रम में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के पंचकल्याणक के विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही ब्र.संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल', डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित कपूरचन्दजी करेली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर के मंगल प्रवचनों का लाभ भी सकल समाज को मिला।

मंगल महोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में प्रतिष्ठाचार्य ब्र.पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं सहयोगियों द्वारा शुद्ध-आम्नायपूर्वक सम्पन्न कराई गई। सम्पूर्ण पंचकल्याणक का सफल संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान, विधिनायक श्री नेमिनाथ भगवान एवं शासननायक श्री महावीर भगवान की प्रतिमायें विराजमान की गई। इसके अतिरिक्त श्री धरसेनाचार्य, श्री कुन्दकुन्दाचार्य, श्री उमास्वामी आचार्य, श्री समन्तभद्राचार्य, श्री नेमिचन्द्राचार्य एवं श्री पद्मप्रभमलधारिदेव के चरण स्थापित किये गये तथा जिनवाणी माता के रूप में श्री समयसार, श्री नियमसार, श्री मोक्षशास्त्र, श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्री गोम्मटसार एवं श्री पद्मपुराण को विराजमान किया गया।

जिनमंदिर के 81 फीट ऊँचे शिखर पर 81 इंच स्वर्णमयी कलश के साथ डीम पर 6 फीट ऊँचा स्वर्णमयी कलश स्वर्णमयी पावन ध्वजा के साथ विराजमान किया गया तथा गुरुदेवश्री की जन्मजयन्ती पर 115 मंगल कलश के साथ धर्मध्वजा एवं कलशारोहण किया गया।

जन्म कल्याणक के अवसर पर वायुयान से पुष्पवर्षा एवं मैनपुरी का विशाल रत्नजड़ित पालना मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा।

इस अवसर पर सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्री जयेशभाई मीनल ठोलिया शिकागो (अमेरिका) एवं तीर्थंकर नेमिनाथ के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती गुणमाला-मोतीलालजी जैन को मिला।

महोत्सव में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन छिन्दवाड़ा की ओर से सती अंजना, वैराग्य की ओर तथा फैडरेशन शाखा नागपुर की ओर से चेतन रसिया नामक ज्ञानवर्धक, वैराग्यप्रेरक नाटकों की प्रस्तुति की गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने में जिला प्रेस क्लब, भारतीय केबल नेटवर्क, जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, लोक निर्माण विभाग, यातायात व शिक्षा विभाग, नगर पालिका परिषद, मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल, जिला ऑलम्पिक संघ के अतिरिक्त श्री टोडरमल संगीत सरिता जयपुर, श्री नन्दीश्वर सेवा संगठन खनियांधाना, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर, शाखा सिवनी, शाखा सागर एवं शाखा करेली, नगर की स्वयंसेवी संस्थायें तथा आवास व्यवस्था में श्री भावेशभाई मुम्बई का विशेष सहयोग रहा।

महोत्सव में मुख्यअतिथि के रूप में पधारे माननीय श्री प्रह्लादजी पटेल (केन्द्रीय कोयला मंत्री भारत शासन), माननीय श्री कमलनाथजी (महासचिव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी), चौधरी श्री चन्द्रभान सिंहजी (केबिनेट मंत्री-मध्यप्रदेश शासन) की विशिष्ट सभा का आयोजन भी किया गया।

महोत्सव में भारतवर्ष के कोने-कोने से हजारों की संख्या में जैन साधर्मी बन्धु सम्मिलित हुये तथा अमेरिका एवं लन्दन से लगभग 50 साधर्मी बन्धु पधारे।

महोत्सव के माध्यम से लगभग 1 लाख 25 हजार रुपयों का सत्साहित्य, प्रवचनों के 1000 ऑडियो कैसिट्स, 600 सी.डी. एवं गुरुदेवश्री के 500 फोटो घर-घर पहुँचे। **ह्न दीपकराज जैन**

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

2

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

पृष्ठभूमि

प्रथम श्रुतस्कन्ध या प्रथम महाअधिकार में सर्वप्रथम 26 गाथाओं में मंगलाचरण के उपरान्त षट्द्रव्य एवं पंचास्तिकाय की सामान्य पीठिका दी गई है। उसमें उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य और गुण-पर्यायत्व के कारण अस्तित्व एवं बहुप्रदेशत्व के कारण कायत्व सिद्ध किया गया है।

'अस्तिकाय' शब्द अस्तित्व और कायत्व का द्योतक है। अस्तित्व + कायत्व = अस्तिकाय। अस्तित्व को सत्ता या सत् भी कहते हैं। यही 'सत्' द्रव्य का लक्षण कहा गया है, जो कि उत्पाद-व्यय और ध्रुवत्व से सहित है। द्रव्य के लक्षण में कायत्व को ग्रहण नहीं किया; क्योंकि 'काल' द्रव्य तो है पर वह कायवान नहीं है। यदि 'काय' को द्रव्य के लक्षण में शामिल करते तो कालद्रव्य को द्रव्यपना नहीं ठहरता, जबकी कालद्रव्य द्रव्य तो है; परन्तु उसमें कायत्व (बहुप्रदेशीपना) नहीं है।

इसके बाद 12-13 वीं गाथा में गुण और पर्यायों का द्रव्य के साथ भेदाभेद दर्शाया गया है और 14 वीं गाथा में तत्सम्बन्धी सप्तभंगी स्पष्ट की गई है। तदुपरान्त सत् का नाश और असत् का उत्पाद सम्बन्धी स्पष्टीकरणों के साथ 20 वीं गाथा तक पंचास्तिकायद्रव्यों का सामान्य निरूपण हो जाने के बाद 26 वीं गाथा तक कालद्रव्य का निरूपण किया गया है।

इसके बाद छहद्रव्यों एवं पंचास्तिकायों का विशेष व्याख्यान आरम्भ होता है। सबसे पहले जीवद्रव्यास्तिकाय का व्याख्यान है, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण होने से सर्वाधिक स्थान लिए हुए हैं और 73 वीं गाथा तक चलता है। 47 गाथाओं में फैले इस प्रकरण में आत्मा के स्वरूप को जीवत्व, चेतयित्व, प्रभुत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, देहप्रमाणत्व, अमूर्तत्व और कर्मसंयुक्तत्व के रूप में स्पष्ट किया गया है।

उक्त सभी विशेषणों से विशिष्ट आत्मा को संसार और मुक्त ह्न दोनों अवस्थाओं पर घटित करके समझाया गया है।

इसके बाद 9 गाथाओं में पुद्गल द्रव्यास्तिकाय का वर्णन है और 7 गाथाओं में धर्म-अधर्म दोनों ही द्रव्यास्तिकायों का वर्णन है, तथा 7 गाथाओं में ही आकाश-द्रव्यास्तिकाय का निरूपण किया गया है। इसके बाद तीन गाथाओं की चूलिका है, जिसमें उक्त पंचास्तिकायों का मूर्तत्व-अमूर्तत्व, चेतनत्व-अचेतनत्व बतलाया गया है।

तदनन्तर तीन गाथाओं में कालद्रव्य का वर्णन कर अन्तिम दो गाथाओं में प्रथम श्रुतस्कन्ध अथवा प्रथम महा-अधिकार का उपसंहार करके इसके अध्ययन का फल बताया गया है।

इसप्रकार 104 गाथाओं का प्रथम श्रुतस्कन्ध समाप्त होता है।

द्वितीय श्रुतस्कन्ध 105 वीं गाथा से आरंभ होता है। यहाँ मंगलाचरण के उपरान्त मोक्ष के मार्गस्वरूप सम्यग्दर्शन, ज्ञान व चारित्र का निरूपण किया है। इसके बाद नवपदार्थों का वर्णन प्रारंभ होता है, जो कि इस खण्ड का मूल प्रतिपाद्य है।

109 वीं गाथा से जीवपदार्थ का निरूपण आरम्भ होता है और 123 वीं गाथा तक चलता है। इसमें सर्वप्रथम जीव के संसारी और मुक्त भेद किये गये हैं। फिर संसारियों के एकेन्द्रियादिक भेदों का वर्णन है।

एकेन्द्रिय के वर्णन में विशेष जानने योग्य बात यह है कि इसमें वायुकायिक और अग्निकायिक को त्रस कहा गया है। यहाँ कथन उनकी हलन-चलन क्रिया देखकर 'त्रसन्तीति त्रसाः ह्न जो चले-फिरे सो त्रस' ह्न इस निरुक्ति के अनुसार ही अर्थ किया गया है। 'द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः' ह्न इस तत्वार्थसूत्रवाली परिभाषा को यहाँ घटित नहीं करना चाहिए।

अन्त में सिद्धों की चर्चा है। साथ में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ये सब कथन व्यवहार का है, निश्चय से ये सब जीव नहीं है। इसका उल्लेख 121 वीं गाथा में इसप्रकार है ह्न

''इन्द्रियाँ जीव नहीं हैं और जिनागम में पृथ्वीकायादि छह प्रकार की कायें भी जीव नहीं है; उनमें रहनेवाला ज्ञान ही जीव है ह्न ज्ञानीजनों द्वारा ऐसी ही प्ररूपणा की जाती है।''

124 वीं गाथा से 127 वीं गाथा तक अजीव पदार्थ का वर्णन है। जिसमें बताया गया है कि सुख-दुःख के ज्ञान तथा हित के उद्यम और अहित के भय से रहित पुद्गल व आकाशादि द्रव्य अजीव हैं। संस्थान, संघात, स्पर्श, रस, गन्ध, वर्णादि गुण व पर्यायें पुद्गल की हैं; आत्मा तो इनसे भिन्न अरस, अरूप, अगंध, अशब्द, अव्यक्त इन्द्रियों द्वारा अग्राह्य एवं अनिर्दिष्ट संस्थान वाला है।

ध्यान रहे, आचार्य कुन्दकुन्द के पाँचों परमागमों में प्राप्त होने वाली 'अरसमरूवमगंधं' आदि गाथा पंचास्तिकाय की 127वीं गाथा है और अजीव पदार्थ के व्याख्यान में आयी है। इस गाथा की टीका के अन्त में आचार्य अमृतचन्द्र लिखते हैं :ह्न

''इसप्रकार यहाँ जीव और अजीव का वास्तविक भेद सम्यग्ज्ञानियों के मार्ग की प्रसिद्धि के हेतु प्रतिपादित किया गया।''

उक्त जीव और अजीव मूलपदार्थों के व्याख्यान के बाद उनके संयोग परिणाम से निष्पन्न आस्रव, बंध, संवर आदि शेष सात पदार्थों के उत्पत्ति स्थान हेतुभूत भावकर्म, द्रव्यकर्म के दुष्चक्र का वर्णन किया गया है। इसके बाद चार गाथाओं में पुण्य-पाप पदार्थ का व्याख्यान किया है।

इसके बाद छह गाथाओं (135 से 140) में आस्रव पदार्थ का निरूपण है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि आस्रव के कारणों में अरहंतादि की भक्ति को भी गिनाया है। उक्त प्रकरण में समागत भक्ति के संदर्भ में आचार्य अमृतचन्द्र का निम्नांकित कथन द्रष्टव्य हैं :-

''अयं हि स्थूललक्ष्यतया केवलभक्तिप्रधानस्याज्ञानिनो भवति। उपरितनभूमिकायामलब्धास्पदस्यास्थानरागनिषेधार्थं तीव्ररागज्वर- विनोदार्थं वा कदाचिज्ज्ञानिनोऽपि भवतीति।[1]

1. पंचास्तिकाय : गाथा-136 की टीका, पृष्ठ-199

इसप्रकार का राग मुख्यरूप से मात्र भक्ति की प्रधानता और स्थूल लक्षवाले अज्ञानियों को होता है। उच्चभूमिका में स्थिति न हो तो तब तक अस्थान का राग रोकने अथवा तीव्ररागज्वर मिटाने के हेतु से कदाचित् ज्ञानियों को भी होता है।''

इसीप्रकार 137 वीं गाथा की समयव्याख्या नामक टीका में समागत अनुकम्पा का स्वरूप भी दृष्टव्य है :ह्न

''यह अनुकम्पा के स्वरूप का कथन है। किसी तृषादि दुःख से पीड़ित प्राणी को देखकर करुणा के कारण उसका प्रतिकार करने की इच्छा से चित्त में आकुलता होना अज्ञानी की अनुकम्पा है। ज्ञानी की अनुकम्पा तो निचली भूमिका में विचरते हुए स्वयं को विकल्प के काल में जन्मार्णव में निमग्न जगत को देखकर मन में किंचित् खेद होना है।''

इसके बाद 141 वीं गाथा से तीन गाथाओं में संवर एवं तीन गाथाओं में निर्जरा पदार्थ का निरूपण है। निर्जरा पदार्थ के व्याख्यान में ध्यान पर विशेष बल दिया गया है, क्योंकि सर्वाधिक निर्जरा ध्यान में ही होती है।

इसके बाद 3 गाथाओं में बंध एवं 4 गाथाओं में मोक्ष का वर्णन है।

जयसेनाचार्य के अनुसार यहाँ द्वितीय महा-अधिकार समाप्त हो जाता है और अब तृतीय महा-अधिकार आरम्भ होता है, पर आचार्य अमृतचन्द्र के अनुसार द्वितीय श्रुतस्कन्ध के भीतर ही 'मोक्षमार्गप्रपंचसूचकचूलिका' आरम्भ होती है। जो बीस गाथाओं में समाप्त होती है; और इसके साथ ही ग्रन्थ भी समाप्त हो जाता है।

परमअध्यात्मरस से भरी हुई यह चूलिका ही पंचास्तिकाय संग्रह का प्रयोजनभूत सार है। वस्तुव्यवस्था के प्रतिपादक इस सैद्धान्तिक ग्रन्थ को आध्यात्मिकता प्रदान करनेवाली यह चूलिका ही है।

इसमें स्वचारित्र और परचारित्र ह्न इसप्रकार चारित्र के दो भेद किए हैं, उन्हें ही स्वसमय और परसमय भी कहा गया है। इन स्वचारित्र और परचारित्र की परिभाषा आचार्य अमृतचन्द्र 156 वीं गाथा की टीका में इसप्रकार देते हैं :-

''स्वद्रव्य शुद्ध-उपयोगरूप परिणति स्वचारित्र है और परद्रव्य में सोपराग-उपयोगरूप परिणति परचारित्र है।''

स्वचारित्र मोक्षमार्ग है और परचारित्र बंधमार्ग ह्न यह बात 157 व 158 वीं गाथा में स्पष्टरूप से कही गई है।

तीर्थ प्रवर्तन दोनों नयों के आधीन होने से इसके बाद साधन-साध्य के रूप में व्यवहार और निश्चय ह्न दोनों प्रकार के मोक्षमार्ग का निरूपण किया गया है, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

गाथा 166, 167 के निम्न कथन में व्यवहार मोक्षमार्ग को साधनरूप से निरूपित करने पर भी उसके प्रति बार-बार सावधान किया गया है ह्न

''अरिहंत, सिद्ध, चैत्य (प्रतिमा), प्रवचन (शास्त्र), मुनिगण और ज्ञान के प्रति भक्ति सम्पन्न जीव पुण्य बहुत बाँधता है; परन्तु वह कर्म का क्षय नहीं करता।

जिसके हृदय में परद्रव्य के प्रति अणुमात्र भी राग वर्तता है, भले ही वह सर्व आगमधर हो, तथापि स्वकीय समय को नहीं जानता।''

अधिक क्या कहें ? आचार्यदेव तो 170 वीं गाथा में यहाँ तक कहते हैं कि ह्न ''संयमतपयुक्त होने पर भी नवपदार्थों तथा तीर्थंकर के प्रति जिसकी बुद्धि का झुकाव वर्तता है और सूत्रों के प्रति जिसे रुचि वर्तती है, उस जीव को निर्वाण दूरतर (विशेषदूर) है।''

अन्त में आचार्यदेव उपदेश देते हैं; आदेश देते हैं, सलाह देते हैं एवं प्रेरणा देते हुए 172 वीं गाथा में कहते हैं :ह्न

''अतः हे मोक्षार्थी जीवो ! तुम कहीं भी किंचित् भी राग मत करो; क्योंकि ऐसा करने से ही वीतराग होकर भवसागर से पार हुआ जाता है।''

इसी गाथा की टीका में आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं :ह्न

''अधिक विस्तार करने से क्या लाभ है? वह वीतरागता जयवंत वर्ते! जो साक्षात् मोक्षमार्ग का सार होने से इस शास्त्र का मूल तात्पर्य है।''

इसी गाथा की टीका में आचार्य अमृतचन्द्र द्वारा व्यवहाराभासी व निश्चयाभासी का जो मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है तथा जिसके आधार पर ही पण्डितप्रवर टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अध्याय में इनके स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला है, वह अनेक बार मूलतः पठनीय है।

सबसे अन्त में परम-आध्यात्मिक सन्त अमृतचन्द्राचार्य का अकर्तृत्व सूचक निम्न छन्द भी दर्शनीय है :ह्न

''स्वशक्तिसंसूचितवस्तुतत्वैःव्याख्याकृतेयं समयस्य शब्दैः।
स्वरूपगुप्तस्य न किंचिदस्ति कर्तव्यमेवामृतचन्द्रसूरेः ॥8॥

अपनी शक्ति से जिन्होंने वस्तु का तत्त्व भलीभाँति कहा है, ऐसे शब्दों ने यह समयव्याख्या नामक टीका बनाई है; स्वरूपगुप्त अमृतचन्द्राचार्य का इसमें किंचित् भी कार्य (कर्त्तव्य) नहीं है।'' **(क्रमशः)**

प्रतियोगितायें सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर (मुखर्जी चौक) में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में संचालित वीतराग-विज्ञान साप्ताहिक पाठशाला के बालकों की धार्मिक प्रतियोगितायें अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुई।

जिसमें दिनांक 4 जनवरी को **चन्द्रप्रभ पार्सल गेम** में नयन जैन ने प्रथम स्थान, आयुषी जैन ने द्वितीय एवं कृतिका जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा सनी, श्वेता एवं ध्रुवी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 11 जनवरी को **हम बनेंगे भगवान** प्रतियोगिता में आयुषी भोरावत ने प्रथम स्थान, मनन जैन ने द्वितीय, सन्नी मुरडिया ने तृतीय एवं लवकुमार ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। दोनों प्रतियोगिताओं की अध्यक्षता फैडरेशन के अध्यक्ष श्री निर्मलजी अखावत ने की। विशिष्ट अतिथि श्रीमती आशा पाण्ड्या एवं मुख्य अतिथि श्री हेमन्तजी शास्त्री थे। कार्यक्रमों का संचालन पण्डित जिनेन्द्र जैन शास्त्री ने किया। अन्त में श्रीमती बसन्त पंचोली ने आभार प्रदर्शन किया। **ह्न सुरेश भोरावत**

बुन्देलखण्ड की पावन धरा पर तीर्थक्षेत्र श्री पपौराजी, श्री

श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब

कार्यक्रम स्थल : शौरीपुर नगरी, राजेन्द्र

(सोमवार, दिनांक 16 फरवरी से रवि

अत्यन्त हर्ष एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि बुन्देलखण्ड की धर्मप्राण नगरी टीकमग
महोत्सव का भव्य आयोजन होने जा रहा है, जिसमें वीतराग भाववाही मुद्रायुक्त मूलनायक श्री
श्री आदिनाथ भगवान, श्री चन्द्रप्रभ भगवान, श्री वासुपूज्य भगवान, श्री मल्लिनाथ भगवान, श्री
सहस्रों साधर्मियों की उपस्थिति में पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान की जायेंगी। महोत्सव
के निमित्त एवं जिनधर्म की प्रभावना के सर्वोत्कृष्ट इस धार्मिक अनुष्ठान में निजकल्याणार्थ स

विद्वत्समागम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, छिन्दवाड़ा
पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर
पण्डित कैलाशचन्दजी 'अचल', भोपाल

प्रतिष्ठाचार्य

बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री,
(खनियांधाना)

निर्देशक

बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री, (सनावद)

सह-निर्देशक

पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया, (अलीगढ़)

मं
प.

*
बा
*
चंद

आयोजक : **श्री 1008 दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रति**

समिति

अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	महामंत्री		कोषाध्यक्ष
मगनलाल गोयल	अनिलकुमार भदौरा	अजितकुमार जैन मडावरा	आलोक वैद्य	सनतकुमार ठगन
पूर्व विधायक-	9425141573	07683-243119	9425145771	07683-242691
कार्याध्यक्ष	**उपाध्यक्ष**	**ऑडीटर**	अमिताभ जैन-244487	अजितकुमार गुढ़ा
खेमचन्द जैन-244783	पूरनचन्द बुखारिया-239139	कमल सर्राफ -244749	कुमार संजय जैन हल्ले	9425145695
गुलाबचन्द मढवैया-242917	कैलाश चौधरी	वीरेन्द्र तैवरया	9425145694	देवेन्द्रकुमार तैवरया

तत्त्वावधान : **श्री कुन्दकुन्द दि. जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, टीकमग**

निवेदक : **अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन एवं**

सहयोग : **सकल दिगम्बर जैन समाज, टीकमगढ़ (म.प्र**

नोट – कृपया इस पत्रिका को जहाँ से सब

आहारजी, श्री बानपुरजी के मध्य टीकमगढ़ नगर में प्रथम बार

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

पार्क, किले का मैदान, टीकमगढ़ (म.प्र.)

वार, दिनांक 22 फरवरी 2004 तक)

ढ़ में श्री 1008 सीमन्धर जिनालय में श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 1008 शान्तिनाथ भगवान, श्री कुन्थुनाथ भगवान, श्री अरनाथ भगवान, श्री सीमन्धर भगवान, नेमिनाथ भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्री महावीर भगवान की अन्तर्मुखी मनोज्ञ प्रतिमायें त्र के विधिनायक श्री 1008 नेमिनाथ भगवान होंगे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि सम्यग्दर्शन परिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

गल आशीर्वाद एवं पावन सान्निध्य

पू.108 आचार्य श्री निर्वाणसागरजी महाराज

सहयोग

पण्डित गुलाबचन्दजी पुष्प, टीकमगढ़ * पण्डित बूलालजी पठा * पण्डित कमलकुमारजी शास्त्री पण्डित सुखानन्दजी बरमाड़ई * पण्डित राजेन्द्रजी वली * पण्डित फूलचन्दजी मैगुआ।

ठा महोत्सव

संयोजक

नन्हे भैया दरगाँय–242728
पं. सुरेशजी पिपरा –244838
वीरेन्द्रकुमार वैद्य–242581
अरुणकुमार ठगन –243040

स्वागताध्यक्ष

डॉ. ओमप्रकाश पंकज
ज्ञान ट्यूबवेल्स'बबलू'

हर्ष जैन–243164
महामंत्री, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

ढ़ (म.प्र.)

ीतराग-विज्ञान बाल मण्डल, टीकमगढ़

.)

मांगलिक कार्यक्रम

16 फरवरी –	झण्डारोहण, मंगल कलश शोभायात्रा, शांतिजाप, जिनेन्द्र पूजन, शास्त्र प्रवचन, इन्द्रप्रतिष्ठाविधि, प्रतिष्ठा मण्डप व मंच का उद्घाटन, याग मण्डल विधान, इन्द्रसभा-राजसभा, मंगल कलश स्थापना।
17 फरवरी –	**गर्भ कल्याणक** – छ: माह पूर्व की क्रिया।
18 फरवरी –	**गर्भ कल्याणक** – घटयात्रा, माता के 16 स्वप्नों का प्रदर्शन, जिनमंदिर में वेदी-कलश-शिखर शुद्धि, माता व अष्ट देवियों की तत्त्वचर्चा।
19 फरवरी –	**जन्मकल्याणक** का विशाल जुलूस, जन्माभिषेक, इन्द्र-राजसभा, ताण्डव नृत्य, नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान, पालना-झूलन, राज दरबार।
20 फरवरी –	**तपकल्याणक** – दीक्षा महोत्सव शोभायात्रा, श्री नेमिकुमार की बारात, दीक्षा-विधि, वैराग्य प्रवचन।
21 फरवरी –	**ज्ञानकल्याणक** – मुनि नेमिनाथ का आहार, वनगमन, प्राण-प्रतिष्ठा, समवशरण रचना व दिव्यध्वनि प्रसारण।
22 फरवरी –	**मोक्षकल्याणक** – गिरनार पर्वत की रचना, जिनमंदिर में श्रीजी विराजमान, कलशारोहण, शांतियज्ञ आदि।

विशेष कार्यक्रम – नगर रथ परिक्रमा

देख सकें, ऐसे सार्वजनिक स्थान पर लगा देवें।

तत्वचर्चा

समयसार का सार 84

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

यह जो पुण्य की व्यवस्था है, वह भी बड़ी विचित्रा है। किसी ने दस कारें खरीदीं; उसमें पैसा खर्च हुआ और पुण्य भी खर्च हुआ। अब वह आदमी उन दस कारों में एकसाथ तो बैठेगा नहीं, वह तो किसी एक कार में ही बैठेगा। तो भी वे दस कारें जितने समय तक उसके पास रहेंगी, वह उनका उपयोग करे या न करे, तब तक उसका पुण्य निरन्तर खर्च होता रहेगा। यदि कोई कार उसकी चोरी हो जाती है, तो उसका कारण यह है कि उसका तत्संबंधी पुण्य समाप्त हो गया है। जैसा कि किसी कवि ने कहा भी है –

जब तक तेरे पुण्य का बीता नहीं करार।
तब तक तेरे माफ हैं, औगुण करो हजार।।

उस कार के चोरी हो जाने में भी लाभ है; क्योंकि वह कार उपयोग में तो आ नहीं रही थी और उसके रहने से पुण्य निरन्तर खर्च हो रहा था।

इस जगत के जीवों को ऐसी परिग्रह संज्ञा है कि घर में पच्चीस जोड़ी पुराने जूते रखते हैं। यद्यपि जिन्दगी में कभी भी उन जूतों को नहीं पहनेगा; पर यदि उन जूतों को फैंकने की बात आती है तो कहता है कि रखे रहने दो, कभी काम आयेंगे। वह समझता है कि ये मुफ्त में पड़े हैं, लेकिन वास्तव में उसमें उसका पुण्य क्षीण हो रहा है।

यदि कोई कहे कि ज्ञेय को जानना तो मेरा स्वभाव है, अधिकार है; तो कहते हैं कि पर को जानने का रस किसी भी दृष्टि से अच्छा नहीं है; क्योंकि यदि पर को जानने में रहोगे तो भगवान आत्मा को नहीं जान पाओगे।

इसप्रकार यदि अपराध हमारे जीवन में हुआ हो, तब अपराध का परिमार्जन अर्थात् प्रतिक्रमण अमृत ही है, लेकिन उससे अच्छा तो यही है कि अपराध हमारे जीवन में हो ही नहीं। यही कारण है कि आचार्यदेव ने ऐसा कथन किया कि जहाँ प्रतिक्रमण को ही विष कहा है, वहाँ अप्रतिक्रमण अमृत कैसे हो सकता है ?

इसके बाद सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार में आचार्यदेव कहते हैं–

ekD[kig vIik.k Bofg r po >kfg r p;A
rRFko fogj f.kPp ek fogjl v..kn0o lAA412AA

हे भव्य ! तू मोक्षमार्ग में अपने आत्मा को स्थापित कर, उसी का ध्यान कर, उसी को चेत – अनुभव कर और उसी में निरन्तर विहार कर; अन्य द्रव्यों में विहार मत कर।

इस गाथा में कहा है कि अपनी आत्मा में ही चेत अर्थात् अपनी आत्मा का अनुभव कर। चेतना तीन प्रकार की हैं – कर्मचेतना, कर्मफलचेतना और ज्ञानचेतना।

करने–करने की धुन सवार होने को कर्मचेतना कहते हैं और कर्मफल भोगने की धुन सवार होने को कर्मफलचेतना कहते हैं और मात्रा सहज ज्ञाता–दृष्टा स्वभाव रूप रहने को ज्ञानचेतना कहते हैं अर्थात् कर्ता, भोक्ता व ज्ञाता को क्रमशः कर्मचेतनावाला, कर्मफल– चेतनावाला और ज्ञानचेतनावाला कहते हैं।

एकेन्द्रियादि जीव से लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक कर्मफल–चेतना की प्रधानता है; क्योंकि कीड़े–मकोड़े को जो भी मिलता है, वही खा लेते हैं। उन्हें तो मात्रा अनुकूलता–प्रतिकूलता का वेदन होता है। इसप्रकार एकेन्द्रिय से असैनी पंचेन्द्रिय तक कर्मफलचेतना की ही प्रधानता है।

फिर सैनी पंचेन्द्रिय होकर जो मनुष्य बड़े–बड़े नेता बन जाते हैं, उनमें कर्मचेतना की प्रधानता पाई जाती है।

कोई यदि ऐसा सोचे कि हमें जो खाने को मिल जाय, वही खा लेंगे, नहीं मिले तो नहीं खायेंगे – ऐसे लोग कहते हैं –

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।।

ये लोग ज्ञानचेतनावाले नहीं हैं, अपितु कर्मफलचेतना वाले ही हैं।

ज्ञानचेतना वाले वे हैं जो यह मानते हैं कि जो होना होगा वह पर्याय की योग्यता के अनुसार होगा, मैं तो मात्रा सहज ज्ञाता–दृष्टा हूँ।

जो लोग ऐसा कहते हैं कि मैं न तो ज्ञाता–दृष्टा हूँ और न ही मैं कर्ता हूँ और न ही भोक्ता हूँ। तो उनके लिए कहते हैं कि वे पुद्गल हैं; क्योंकि वे सभी का निषेध कर रहे हैं।

किसी अपेक्षा पर को जानने का निषेध भी है, क्योंकि क्षयोपशम ज्ञान में दो काम एकसाथ नहीं हो सकते। कहा भी है –

nk iFk iFkh py u iFkk] nk e[k lbl l, u dFkkA
nk; dke ugh gk; l;ku] fo"k; Hkkx v# ek{k Hkh tkuAA

जिनवाणी में ऐसा उपदेश कदम–कदम पर मिलेगा कि तू अपने भगवान आत्मा को जान और इस जगत से दृष्टि हटा। जगत को तो बहुत बार जाना, लेकिन उसके जानने से तुम्हें आज तक क्या मिला? यह उपदेश की भाषा है, तत्त्वप्रतिपादन की नहीं।

तत्त्वप्रतिपादन में तो ऐसा कहेंगे कि केवलज्ञान में सारा लोकालोक एकसाथ झलकता है; इसलिए केवलज्ञान में तो यह प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता कि किसे जाने और किसे नहीं जाने? यह प्रश्न तो क्षयोपशम ज्ञान में ही संभव है; परन्तु क्षयोपशम ज्ञान की प्रत्येक समय की पर्याय में यह योग्यता तो अनादिकाल से ही सुनिश्चित है कि वह कब और किसको जाने ?

अतएव इसमें कर्तृत्व का अभिमान नहीं होना चाहिए कि मैंने ऐसा किया, तो ऐसा हुआ। अरे ! तुम्हारा ऐसा होना था, इसलिए ऐसा हुआ। टोडरमलजी भी कहते हैं –

भली होनहार है; इसलिए जिस जीव को ऐसा विचार आता है .... अर्थात् जिनके संसार समुद्र का किनारा निकट आ गया है, उन्हीं को ऐसी बुद्धि आती है, इसलिए पर में कर्तृत्व का अभिमान नहीं करना।

अतएव 412 गाथा में कहा कि अपने भगवान आत्मा में ही विहार करो अर्थात् अपने भगवान आत्मा को ही जानो।

इसी भाव को प्रदर्शित करनेवाली गाथा का पद्यानुवाद इस प्रकार है –

मोक्षपथ में थाप निज को चेतकर निज ध्यान धर।
निज में ही नित्य विहार कर, परद्रव्य में न विहार कर।।412।।

आचार्य कहते हैं कि यही मेरा आदेश है, यही मेरा उपदेश है और यही समयसार का सार है।

इस जगत में न कुछ ग्रहण करना है और न किसी का त्याग करना है; क्योंकि आत्मा त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति से युक्त है। त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति आत्मा का स्वभाव है, जिसका अर्थ है कि आत्मा ने आजतक न कुछ ग्रहण किया है और न ही त्याग किया है; क्योंकि त्याग ग्रहणपूर्वक ही होता है।

यदि कोई कहे कि हमें कुछ छोड़ना नहीं पड़ेगा तो कहते हैं कि तुम्हें सिर्फ इतना जानना पड़ेगा कि मेरा कुछ भी नहीं है अर्थात् अपनी मान्यता में परिवर्तन करना पड़ेगा। समस्त जीवों को बाह्य पदार्थों का छोड़ना ही छोड़ना लगता है, जबकि आत्मा उनके ग्रहण और त्याग से शून्य है।

इसलिए ऐसा कहते हैं कि आत्मा को जानने के अलावा कोई दूसरा काम नहीं है, आत्मा की मर्यादा ज्ञान तक ही है।

यदि इन पच्चीस प्रवचनों को सुनकर या पढ़कर कोई कहे कि आप जो भी कहें, हम सब छोड़ने को तैयार हैं; तो समझ लेना चाहिए कि यह समयसार का सार उसकी समझ में आया ही नहीं; क्योंकि जब ये पदार्थ तुम्हारें हैं ही नहीं, तो तुम इनको क्या छोडोगे?

महाभारत में एक कथा आती है कि पाण्डवों ने दिग्विजय के बाद अश्वमेघ यज्ञ किया; जिसमें किमिच्छिक दान दिया। यज्ञ के अंत समय में सभी पाण्डव व श्रीकृष्ण वहाँ बैठे थे, तभी एक नेवला आया; जिसका आधा शरीर सोने का था और आधा नेवले जैसा। वह नेवला यज्ञ की राख में लोट रहा था तो युधिष्ठिर और अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा।

यह नेवला यहाँ क्यों आया है और यह क्या कर रहा है?

युधिष्ठिर को इस बात का गर्व था कि जैसा यज्ञ मैंने किया है, वैसा यज्ञ न तो आज तक कभी हुआ है और न कभी होगा।

तब श्रीकृष्ण कहते हैं कि उसी नेवले से पूछो, तो युधिष्ठिर उस नेवले से पूछते हैं और वह नेवला कहता है कि –

''एक घर में चार सदस्य रहते थे – ब्राह्मण, ब्राह्मण की पत्नी और उनके लड़का व लड़की। एक बार जब अकाल पड़ा और उन सभी सदस्यों को सात दिन तक कुछ भी खाने को नहीं मिला। सात दिन के बाद उन्हें थोड़ा सत्तू मिला, तो वे मिलकर खाने ही वाले थे कि उसी समय एक आदमी ने बाहर से आवाज लगाई कि मैं चौदह दिन से भूखा हूँ तथा मुझे कुछ खाने को दे दो।

तब वह ब्राह्मण परिवार सोचता है कि हम तो सात दिन से ही भूखे हैं और यह तो चौदह दिन से भूखा है। इसप्रकार वह ब्राह्मण, उसकी पत्नी और उसके बच्चे सभी अपना–अपना हिस्सा उसे दे देते हैं और वह आदमी उन चारों को आशीर्वाद देकर चला जाता है और वे चारों प्राणी भूख के कारण मर जाते हैं।

इतनी कहानी सुनाने के बाद नेवला फिर कहता है कि जब मैं वहाँ से निकला और जो सत्तू थोड़ा–बहुत वहाँ गिर गया था, वह सत्तू मेरे शरीर के जिस–जिस हिस्से को लगा, वह हिस्सा सोने का होगया। इसप्रकार मेरा आधा शरीर तो सोने का हो गया और आधा शरीर नेवले जैसा रहा। तब मैं अपना शेष शरीर भी सोने का बनाने के लिए बहुत से महिमावंत तीर्थों पर गया, लेकिन उन तीर्थों से कुछ भी नहीं हुआ।

तभी मैंने यह सुना कि युधिष्ठिर ने महायज्ञ किया है और यदि उस यज्ञ की राख में मैं लोटूँगा, तो मेरा शेष आधा शरीर भी सोने का हो जायेगा। इसी भावना से मैं इस राख पर घंटे भर से लोट रहा हूँ, लेकिन कुछ भी नहीं हो रहा है।

नेवले की इस कहानी को सुनकर श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि तुम्हें कुछ समझ में आया कि नहीं?

अब युधिष्ठिर यदि ऐसा कहते हैं कि यह समझ में आया कि मेरा यह यज्ञ उस आदमी के दान के बराबर है, तो युधिष्ठिर की समझ में कुछ नहीं आया; क्योंकि यदि यह महायज्ञ उस आदमी के दान के बराबर होता तो उस नेवले का आधा शरीर भी सोने का हो जाता, लेकिन नहीं हुआ।

इसीप्रकार यदि समग्र समयसार को सुनकर कोई यह कहे कि हम स्त्री, पुत्रा, मकान, जायदाद छोड़कर साधु बनने को तैयार हैं, तो समयसार उसकी समझ में नहीं आया; क्योंकि समयसार में तो यह कहा है कि ये स्त्री, पुत्रा, मकान, जायदाद तुम्हारे हैं ही नहीं। आत्मा तो त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति से युक्त है अर्थात् आत्मा ने आजतक किसी पर का न कुछ ग्रहण किया और न ही कुछ छोड़ा है।

इसलिए आचार्यदेव गाथा नं. 412 में कहते हैं कि अन्य सभी विकल्पों को तोड़कर अपनी आत्मा में ही स्थिर हो जाओ और उसी का ही ध्यान करो।

वास्तव में यह ध्यान भी करने की चीज नहीं, अपितु होने की चीज है। यह करने की भाषा तो उपदेश की भाषा है। समयसार की भाषा तत्त्वप्रतिपादन की भाषा है, द्रव्यानुयोग की भाषा है। 'ऐसा होता है' – यह करणानुयोग की भाषा है, 'ऐसा हुआ' – यह प्रथमानुयोग की भाषा है, 'ऐसा करना चाहिए' – यह चरणानुयोग की भाषा है और 'वस्तुस्वरूप ऐसा है' – यह द्रव्यानुयोग की भाषा है।

समयसार में द्रव्यानुयोग की भाषा का प्रयोग करते हुए आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ और आत्मानुभूति से प्राप्त होनेवाला तत्त्व हूँ।

यह ज्ञानानंदस्वभावी आत्मतत्त्व आत्मानुभूति में ही प्राप्त होता है – इस सार को बतानेवाला समयसार का सार यहीं समाप्त होता है।

●●●

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा विरचित तीर्थंकर स्तवन क्रमश: यहाँ दिया जा रहा है ह्न

तीर्थंकर-स्तवन

४. श्री अभिनन्दननाथ स्तवन

''मैं हूँ स्वतंत्र स्वाधीन प्रभु, मेरा स्वभाव सुखनन्दन है।
राग रंग अरु भेदभाव में, भटकन ही भव बन्धन है ।।''
यह तथ्य बताया है जिसने, वे तीर्थंकर अभिनन्दन हैं।
त्रैलोक्यदर्शि अभिनन्दन को, मेरा सहस्र अभिवन्दन है ।।

५. श्री सुमतिनाथ स्तवन

जो जानते हैं सुमतिजिन के, जिनवचन को ज्येष्ठतम।
जो मानते हैं सुमतिजिन की, साधना को श्रेष्ठतम ।।
जिनके परम पुरुषार्थ में, निज आत्मा ही है प्रमुख।
वे मुक्तिपथ के पथिक हैं, संसार से वे हैं विमुख ।।

६. श्री पद्मप्रभ स्तवन

महामोह के घने तिमिर को, सम्यक् सूर्य भगाता है।
ज्ञान द्वीप जगमग ज्योति से, मुक्तिमार्ग मिल जाता है ।।
मोह नींद में सोये जग को, दिनकर दिव्य जगाता है।
पद्मप्रभ की शरणागत से, भवबन्धन कट जाता है ।।

७. श्री सुपार्श्वनाथ स्तवन

पत्थर सुपारस है वही, सोना करै जो लोह को।
भगवन सुपारस है वही, भस्मक करै जो मोह को ।।
सर्वज्ञ समदर्शी सुपारस, शिवमग बताते जगत को।
सप्तम सुपारस है वही, भगवन बनाते भगत को ।।

ह्न यह 'तीर्थंकर स्तवन' पुस्तक रूप में भी उपलब्ध है।

विद्वत्परिषद की जयपुर इकाई का गठन

जयपुर : यहाँ दिनांक 18 जनवरी 2004 को श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद की इकाई का गठन किया गया। जिसमें **संरक्षक** के रूप में पण्डित अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित ज्ञानचन्दजी बिल्टीवाला को चुना गया। **परामर्शदाता** डॉ. पी.सी. जैन एवं डॉ. प्रेमचन्द रांवका को चुना गया। तथा **अध्यक्ष** पण्डित बुद्धिप्रकाशजी भास्कर, **उपाध्यक्ष** पण्डित विमलकुमारजी प्रतिष्ठाचार्य, **सचिव** डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई, **कोषाध्यक्ष** पण्डित विनयचन्दजी पापड़ीवाल एवं **प्रचार सचिव** डॉ.प्रभाकरजी सेठी को चुना गया। **ह्न अखिल बंसल**

हार्दिक बधाई

श्री नरेन्द्रकुमारजी कासलीवाल पुत्र स्व.श्री कस्तुरचन्दजी कासलीवाल ने जैन अनुशीलन केन्द्र राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से **राजस्थान के जैन मन्दिर : एक अध्ययन** नामक विषय पर डॉ. पी. सी. जैन एवं डॉ. आर. एस. मीना के संयुक्त निर्देशन में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की; एतदर्थ जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई !

ह्न प्रबन्ध सम्पादक

फरवरी माह में आनेवाली तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

2 **फरवरी**	– भगवान अभिनन्दननाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
4 **फरवरी**	– भगवान धर्मनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
10 **फरवरी**	– भगवान पद्मप्रभ का मोक्षकल्याणक
12 **फरवरी**	– भगवान सुपार्श्वनाथ का ज्ञानकल्याणक
13 **फरवरी**	– भगवान चन्द्रप्रभ का ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक
	– भगवान सुपार्श्वनाथ मोक्षकल्याणक
14 **फरवरी**	– भगवान पुष्पदन्त का गर्भकल्याणक
16 **फरवरी**	– भगवान ऋषभनाथ का ज्ञानकल्याणक
	– भगवान श्रेयांसनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
17 **फरवरी**	– भगवान मुनिसुव्रतनाथ का मोक्षकल्याणक
19 **फरवरी**	– भगवान वासुपूज्य का जन्म एवं तप कल्याणक
23 **फरवरी**	– भगवान अरनाथ का गर्भकल्याणक
25 **फरवरी**	– भगवान मल्लिनाथ का मोक्षकल्याणक
28 **फरवरी**	– भगवान संभवनाथ का गर्भकल्याणक

पंचपरमेष्ठी मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

सेमारी (राज.) : यहाँ दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल सेमारी द्वारा पंचपरमेष्ठी मण्डल विधान का आयोजन अत्यन्त उत्साहपूर्वक किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा ने सम्पन्न कराये तथा आपके द्वारा प्रतिदिन प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं रात्रि में समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर में पण्डित लक्ष्मीचन्दजी जैन डूंगरपुर द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा एवं सायंकाल पण्डित राजकुमारजी जैन पिड़ावा द्वारा बालकों के लिये बालबोध पाठमाला की कक्षा ली गई। प्रतिदिन रात्रि में भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर पण्डित खूबीलालजी जैन, पण्डित महावीरजी जैन एवं पण्डित टेकचन्दजी जैन का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) फरवरी (प्रथम) 2004
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127